परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद अनन्तव्रत विधान

कृतिकार
परम पूज्य आचार्यश्री
विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

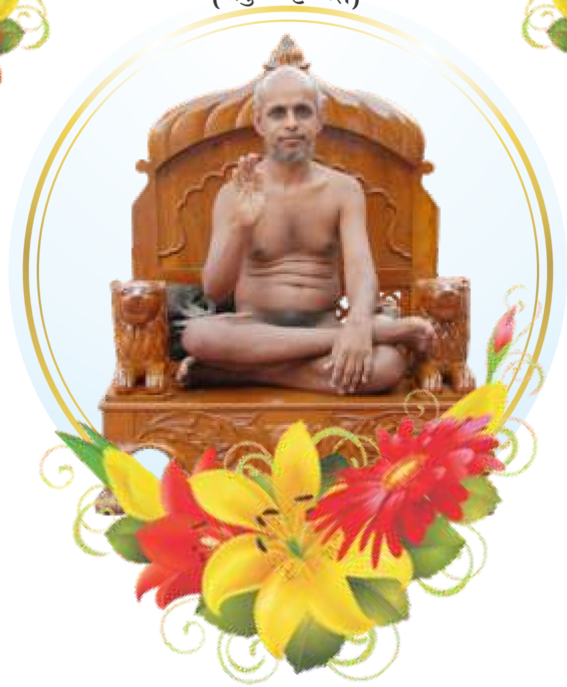

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
अनन्त व्रत विधान

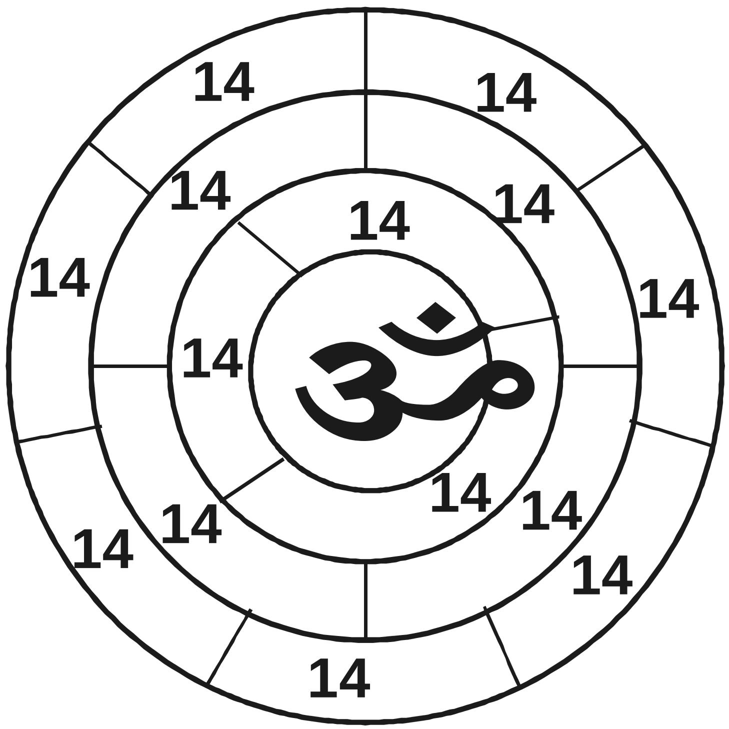

ॐ ह्रीं अनन्तव्रताराध्य श्री अनन्त केवलिने नमः।

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद अनन्त व्रत विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पञ्चकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
क्षुल्लक विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था
दीदी9660996425, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी
● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 31/- रु. मात्र (आगामी प्रकाशन हेतु)

-: अर्थ सौजन्य : -
श्री मगनचन्द जी जैन श्रीमती बीना जी जैन के सुपुत्र
श्रीमान् शशी भूषण जैन पुत्रवधू श्रीमती सीमा रानी जैन, सुपुत्र पूरणजी, हितेनजी
संजय ग्राम ओल्ड दिल्ली ग्रेड, गुड़गाँव मो. 09891515745

श्री अनन्त व्रत पूजन विधि

अनन्तव्रते तु एकादश्यामुपवासः द्वादश्यामेकभक्तं त्रयोदश्यां काञ्जिकं चतुर्दश्यामुपवासस्तभावे यथा शक्तिस्तथा कार्यम्। दिनहानिवृद्धौ स एव क्रमः स्मर्त्तव्यः।

अर्थ–अनन्त व्रत में भाद्रपद शुक्ला एकादशी को उपवास, द्वादशी को एकाशन, त्रयोदशी को कांजी–छाछ अथवा छाछ में जौ, बाजरा के आटे को मिलाकर महेरी–एक प्रकार की कढ़ी बनाकर लेना और चतुर्दशी को उपवास करना चाहिए। यदि इस विधि के अनुसार व्रत पालन करने की शक्ति न हो तो शक्ति के अनुसार व्रत करना चाहिए। तिथि–हानि या तिथि–वृद्धि होने पर पूर्वोक्त क्रम ही अवगत करना चाहिए अर्थात् तिथि–हानि में एक दिन पहले से और तिथि–वृद्धि में एक दिन अधिक व्रत करना होता है।

विवेचन–अनन्तव्रत भादों सुदी एकादशी से आरम्भ किया जाता है। प्रथम एकादशी को उपवास कर द्वादशी को एकाशन करे अर्थात् मौन सहित स्वाद रहित प्रासुक भोजन ग्रहण करें, सात प्रकार के गृहस्थों के अन्तराय का पालन करें। त्रयोदशी को जिनाभिषेक, पूजन–पाठ के पश्चात् छाछ या छाछ में जौ, बाजरा के आटे से बनाई गई महेरी–एक प्रकार की कढ़ी का आहार लें। चतुर्दशी के दिन प्रोषध करे तथा सोना, चाँदी या रेशम–सूत का अनन्त बनाये, जिसमें चौदह गाँठ लगाये।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह तीर्थंकरों के नामों का उच्चारण, दूसरी गाँठ पर सिद्धपरमेष्ठी के चौदह (तपसिद्धि, विनयसिद्धि, संयमसिद्धि, चारित्रसिद्धि, श्रुताभ्यास, निश्चयात्मक भाव, ज्ञान, बल, दर्शन, वीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व) गुणों का चिंतन, तीसरी पर उन चौदह मुनियों का नामोच्चारण जो मति–श्रुत–अवधिज्ञान के धारी हुए हैं, चौथी पर अर्हन्त भगवान के चौदह देवकृत अतिशयों का चिन्तन, पाँचवीं पर जिनवाणी के चौदह पूर्वों का चिन्तन, छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का चिन्तन, सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप, आठवीं पर चौदह जीव समासों का स्वरूप, नौवीं पर गंगादि चौदह नदियों का उच्चारण, दसवीं पर चौदह राजू प्रमाण ऊँचे लोक का स्वरूप, ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों (गृहपति, सेनापति, शिल्पी, पुरोहित, स्त्री, हाथी, घोड़ा, चक्र, असि (तलवार), छत्र, दण्ड, मणि, चर्म, कांकिणी। कांकिणी रत्न की विशेषता यह होती है कि इससे कठोर से कठोर वस्तु पर भी लिखा जा सकता है, इससे सूर्य के प्रकाश से भी तेज प्रकाश निकलता है।) का, बारहवीं पर चौदह स्वरों का, तेरहवीं पर चौदह तिथियों का एवं चौदहवीं गाँठ पर आभ्यन्तर चौदह प्रकार के परिग्रह से रहित मुनियों का चिन्तन करना चाहिए। इस प्रकार अनन्त का निर्माण करना चाहिए।

पूजा करने की विधि यह है कि शुद्ध कोरा घड़ा लेकर उसका प्रक्षाल करना चाहिए। पश्चात् उस घड़े पर चंदन, केशर आदि सुगंधित वस्तुओं का लेप करना तथा उसके भीतर सोना, चाँदी या ताँबे के सिक्के रखकर सफेद वस्त्र से ढक देना चाहिए। घड़े पर पुष्पमालाएँ डालकर उसके ऊपर थाली प्रक्षाल करके रख देनी चाहिए। थाली में अनन्त व्रत का माइना और यंत्र लिखना, पश्चात् चौबीसी एवं पूर्वोक्त विधि से गाँठ दिया हुआ अनन्त विराजमान करना होता है। अनन्त का अभिषेक कर चंदन, केशर का लेप किया जाता है। पश्चात् आदिनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह भगवानों की स्थापना यंत्र पर की जाती है। अष्ट द्रव्य से पूजा करने के उपरान्त **'ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनन्तकेवलिने नमः'** इस मंत्र को 108 बार पढ़कर पुष्प चढ़ाना चाहिए अथवा पुष्पों से जाप करना चाहिए। पश्चात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं स अमृतवाहिने नमः', अनेन मंत्रेण सुरभिमुद्रां धृत्वा उत्तमगन्धोदकप्रोक्षणं कुर्यात्'** अर्थात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं सं अमृतवाहिने नमः'** इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सुरभि मुद्रा द्वारा सुगंधित जल से अनन्त का सिंचन करना चाहिए। अनन्तर चौदहों भगवानों की पूजा करनी चाहिए।

'ॐ ह्रीं अनन्ततीर्थंकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्वशांतिं तुष्टिं सौभाग्यमायुरारोग्यैश्वर्यमष्ट–सिद्धिं कुरु कुरु सर्वविघ्नविनाशनं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र से प्रत्येक भगवान की पूजा के अनन्तर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। **'ॐ ह्रीं हं स अनन्तकेवलीभगवान् धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर अनन्त पर चढ़ाये हुए पुष्पों की आशिका एवं **'ॐ ह्रीं अर्हन्नः सर्वकर्मबंधनविमुक्ताय नमः स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर शांति जल की आशिका लेनी चाहिए। इस व्रत में **'ॐ ह्रीं अर्हं हं सं अनन्तकेवलिने नमः'** मंत्र का जाप करना चाहिए। पूर्णिमा को पूजन के पश्चात् अनन्त को गले या भुजा में धारण करें।

कथा–इसी जम्बूद्वीप के आर्यखण्डों में कौशल देश है। उसमें अयोध्या नगरी के पास पद्मखण्ड नाम का ग्राम था। उस ग्राम में सोमशर्मा नाम का एक अति दरिद्र ब्राह्मण अपनी सोमा नाम की स्त्री और बहुत सी पुत्रियों सहित रहता था। वह (ब्राह्मण) विद्याहीन और दरिद्र होने के कारण भिक्षा माँगकर उदर पोषण करता था, तो भी भरपेट खाने को नहीं पाता था।

तब एक दिन अपनी स्त्री की सम्मति से उसने सहकुटुम्ब प्रस्थान किया तो चलते समय मार्ग में शुभ शकुन हुए अर्थात् सौभाग्यवती स्त्रियाँ सन्मुख मिलीं। कुछ और आगे चला तो क्या देखता है कि हजारों नर–नारी किसी स्थान को जा रहे हैं, पूछने से विदित हुआ कि वे सब अनन्तनाथ भगवान के समवसरण में वंदना के लिए जा रहे हैं।

यह जानकर यह ब्राह्मण भी उनके पीछे हो लिया और समवसरण में गया। वहाँ प्रभु की वंदना कर तीन प्रदक्षिणा दी और नर कोठे में यथास्थान पर जा बैठा, जहाँ समवसरण में दिव्यध्वनि सुनकर उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई।

पश्चात् चारित्र का कथन सुनकर उसने जुआ, माँस, मद्य, वेश्यासेवन, शिकार, चोरी और परस्त्रीसेवन ये सात व्यसन त्याग किये। पंच उदुम्बर और तीन मकार त्याग ये अष्ट मूलगुण भी धारण किये। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और अतिशय लाभ इन पंच पापों का एकदेश त्यागरूप अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी ग्रहण किये। इस प्रकार सम्यक्त्व सहित बारह व्रत लिए। पश्चात् कहने लगा–

हे नाथ ! मेरी दरिद्रता किस प्रकार से मिटे सो कृपा करके कहिए।

तब भगवान ने उसे अनन्त चौदस का व्रत करने को कहा। इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि भादो सुदी 11 का उपवास कर 12 और 13 को एकाशन करें अर्थात् एकाशन से मौन सहित स्वादरहित प्रासुक भोजन करें, सात प्रकार गृहस्थों के अन्तराय पाले, पश्चात् चतुर्दशी के दिन उपवास करें तथा चारों दिन ब्रह्मचर्य रखे, भूमि पर शयन करें, व्यापार आदि गृहारंभ न करे। मोहादि रागद्वेष तथा क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्यादिक कषायों को छोड़े, सोना, चाँदी या रेशम, सूत आदि का अनन्त बनाकर, इसमें प्रत्येक गाँठ पर 14 गुणों का चिन्तवन करके 14 गाँठ लगाना।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ भगवान से अनन्तनाथ भगवान तक 14 तीर्थंकरों के नाम उच्चारण करें।

दूसरी गाँठ पर सिद्ध परमेष्ठी के 14 गुण चिन्तवन करें। तीसरी पर 14 मुनि जो मति, श्रुत, अवधिज्ञान युक्त हो गये हैं उनके नाम उच्चारण करें।

चौथी पर केवली भगवान के 14 अतिशय केवलज्ञान कृत स्मरण करें। पाँचवीं पर जिनवाणी में जो 14 पूर्व हैं उनका चिन्तवन करें।

छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का विचार करें। सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप विचारें।

आठवीं पर 14 जीवसमासों का विचार करें, नवमीं पर गंगादि 14 नदियों का नामोच्चारण करें। दशवीं पर तीन लोक जो 14 राजू प्रमाण ऊँचा है उसका विचार करें।

ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों का चिन्तवन करें। बारहवीं पर 14 स्वर (अक्षर) का चिन्तवन करें। तेरहवीं पर चौदह तिथियों का विचार करें। चौदहवीं गाँठ पर मुनि के मुख्य 14 दोष टालकर जो आहार लेते हैं, उनका विचार करें। इस प्रकार 14

गाँठ लगाकर मेरु के ऊपर स्थापित प्रतिमा के सन्मुख इस अनन्त को रखकर अभिषेक करें। अनन्त प्रभु की पूजन करें फिर नीचे लिखा मंत्र 108 बार जपें–

मंत्र–(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः।

(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवदो महाविज्जा–महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

इस प्रकार चारों दिन अभिषेक, जाप और जागरण, भजन, पूजनादि करें। फिर पूनम के दिन उस अनन्त को दाहिनी भुजा पर या गले में बाँधे।

पश्चात् उत्तम, मध्यम या जघन्य पात्रों में जो समय पर मिल सकें उन्हें आहार आदि दान देकर आप पारणा करें। इस प्रकार 14 वर्ष तक करें। पश्चात् उद्यापन करें, तब 14 प्रकार के उपकरण मंदिर में देवें। जैसे–शास्त्र, चमर, छत्र, चौकी आदि। चार प्रकार संघों को आमंत्रण करके धर्म की प्रभावना करें। यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करें।

इस प्रकार श्रीमुख से व्रत की विधि और उत्तम फल सुनकर उन ब्राह्मण ने स्त्री सहित यह व्रत लिया तथा और भी बहुत लोगों ने यह व्रत लिया।

पश्चात् नमस्कार करके वह ब्राह्मण अपने ग्राम में आया और भाव सहित 14 वर्ष व्रत को विधियुक्त पालन करके उद्यापन किया। इससे दिनोंदिन उसकी बढ़ती होने लगी। इसके साथ रहने से और भी बहुत लोग धर्ममार्ग में लग गये क्योंकि लोग जब उसकी इस प्रकार बढ़ती देखकर उससे इसका कारण पूछते तो वह अनन्त व्रत आदि व्रतों की महिमा और जिनभाषित धर्म के स्वरूप का कथन कह सुनाता। इससे बहुत लोगों की श्रद्धा उस पर हो जाती और वे उसे गुरु मानने लगते।

इस प्रकार वह ब्राह्मण भले प्रकार सांसारिक सुखों को भोगकर अन्त में सन्यासमरण कर स्वर्ग में देव हुआ। उसकी स्त्री भी समाधि से मरकर उसी स्वर्ग में देवी हुई। वहाँ अपनी पूर्व पर्याय का अवधि से विचारकर धर्मध्यान सेवन करके वहाँ से चये, सो वह ब्राह्मण का जीव अनन्तवीर्य नाम का राजा हुआ और ब्राह्मणी उसकी पट्टरानी हुई। ये दोनों दीक्षा लेकर अनन्तवीर्य तो इसी भव से मोक्ष को प्राप्त हुए और श्रीमती स्त्रीलिंग छेदकर अच्युत स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से चयकर मध्यलोक में मनुष्य भव धारण कर संयम ले मोक्ष जावेगी।

इस प्रकार एक दरिद्री ब्राह्मणी अनन्त व्रत पालकर सद्गति को पाकर उत्तमोत्तम गति को प्राप्त को प्राप्त हुई। यदि अन्य भव्य जीव यह व्रत पालेंगे तो वे भी सद्गति पावेंगे।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री अनन्त व्रत पूजन

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा- सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भु छंद)

जन्म मरण करके यह चेतन, बार-बार दुख पाता है।
शुद्ध भाव के नीर रहित हो, चतुगर्ती भटकाता है।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन को मीत बनाकर, भव-भव में दुख पाए हैं।
भव सन्ताप में फँसकर हमने, जग में गोते खाए हैं।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशवान द्रव्यों को पाने, में अखण्ड श्रद्धा खोये।
चर्म चक्षु तो खुले रहे पर, मोह नींद में हम सोये।।

व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग की आँधी में फँस, शील रत्न का नाश किया।
श्री जिनेन्द्र का दर्शन करके, गुण चैतन्य प्रकाश किया।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रायकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के वश होकर व्यंजन, सरस श्रेष्ठ शुभ खाये हैं।
लेकिन क्षुधा मिटी ना मेरी, बार-बार पछताए हैं।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम के अंधियारे, में ना ज्ञान के दीप जले।
शिवपुर के वासी बनते वह, जो सम्यक् शुभ राह चले।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

परद्रव्यों को अपना माना, यही हमारी भूल रही।
कर्मों का हो नाश शीघ्र ही, जो अपनाए मार्ग सही।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी जो कार्य करें शुभ, उसको फल की चाह जगे।
रत्नत्रय के अनुपम तरु में, फल शिवकारी श्रेष्ठ लगे।।

व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य त्यागने वाले जग में, पद अनर्घ शुभ पाते हैं।
संयम पथ के अनुयायी ही, मोक्ष महल को जाते हैं।।
व्रत अनन्त करते जो प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
संयम पाकर के अनुक्रम से, मोक्ष महल को जाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा के लिए, लाए भरके नीर।
व्रत अनन्त करके मिटे, जन्म जरा की पीर।।

शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हम हे नाथ।
शिवपद के राही बनें, झुका रहे पद माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- अनन्तनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त के कोष।
जयमाला गाते विशद, जीवन हो निर्दोष।।

(शम्भू छंद)

तीर्थंकर चौदहवें बनकर, इस जग का उद्धार किया।
दिव्य देशना देकर के प्रभु, नर जीवन का सार दिया।।
जीव समास मार्गणा चौदह, गुणस्थान बताए हैं।
चौदह कुलकर हुए पूर्व में, कुल का ज्ञान कराए हैं।।1।।
तत्त्वों के श्रद्धान् रहित हो, वह मिथ्यात्व कहाता है।
उपशम सम्यक् से गिरता जो, सासादन में आता है।।
गुणस्थान मिश्र है तृतिय, सम्यक् मिथ्याभाव जगें।
दधि गुड़ या चूना हल्दी सम, मिश्रित जैसे भिन्न लगें।।2।।

अविरत सम्यक्दृष्टी चौथा, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
त्रस हिंसा का त्यागी पंचम, देशव्रती कहलाता है।।
हो प्रमाद से युक्त महाव्रत, है प्रमत्त वह गुणस्थान।
अप्रमत्त होता प्रमाद बिन, ऐसा कहते हैं भगवान।।3।।
अष्टम गुणस्थान प्राप्त कर, उपशम क्षायिक श्रेणीवान।
हो परिणाम अपूर्व श्रेष्ठ शुभ, हो अपूर्व वह गुणस्थान।।
भेद नहीं सम समयवर्ति में, अनवृत्ती गुण कहलाए।
सूक्ष्म साम्पराय दसम गुणस्थान, सूक्ष्म लोभयुत शुभ पाए।।4।।
है उपशान्त मोह ग्यारहवाँ, मोहपूर्ण होवे उपशांत।
बारहवें गुणस्थान में भाई, पूर्ण मोह का होता अन्त।।
सयोग केवली कर्म घातिया, क्षयकर पाते गुणस्थान।
अयोग केवली योग नाशकर, चौदहवाँ पाते गुणस्थान।।5।।
गुणस्थानातीत सिद्ध जिन, सिद्धशिला पर करते वास।
नित्य निरंजन अविनाशी हो, आत्म गुणों का करें प्रकाश।।
समवशरण में दिव्य देशना, देकर दिया जगत कल्याण।
भव्य जीव जिन मार्ग प्राप्त कर, बनते अतिशय महिमावान।।6।।
अनन्तनाथ जिनवर अनन्त गुण, पाने वाले हुए महान्।
शत इन्द्रों ने चरणों आकर, किया विनत होके गुणगान।।
विशद भाव से श्री अरहन्त जिन, की पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित कर में लाए।।7।।

दोहा– कोटि सूर्य से भी अधिक, जिनवर ज्योर्तिमान।
जिन अनन्त तीर्थेश हैं, गुण अनन्त की खान।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– इस अपार संसार में, आप एक आधार।
अतः आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः

प्रथम वलयः (14 तीर्थंकर)

दोहा– गुण अनन्त के कोष हैं, तीर्थंकर भगवान।
व्रत अनन्त का हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

आदिम तीर्थंकर बन प्रभु ने, धरती पर अवतार लिया।
स्वयं बुद्ध होकर भगवन् ने, संयम दे उपकार किया।।
मोक्ष मार्ग पर सबसे पहले, चलकर जग को बता दिया।
सरल किया है मोक्ष का मारग, बढ़ो इसी पर जता दिया।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ बनकर के तुमने, राग–द्वेष को जीत लिया।
सार्थक नाम आपने पाकर, कर्मों को भयभीत किया।।
कर्म विजेता बनने हेतू, हमको भी दे दो वरदान।
अजितनाथ जी तव चरणों का, विशद लगाऊँ मैं भी ध्यान।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ जी संभव कर दो, मोक्ष मार्ग मेरे भी हेत।
भव समुद्र को पार करूँ मैं, पा जाऊँ आतम का भेद।।
भटक रहे हैं चरण-शरण बिन, अपनी शरण हमें दीजे।
देकर हमको 'विशद' सहारा, अपने पास बुला लीजे।।3।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अभिनंदन ! तव चरणों की, धूली है शीतल चंदन।
आत्म ध्यान को पाकर तुमने, मैटा भव का आक्रंदन।।
तप के द्वारा तपा तपाकर, आत्म बनाया है कुंदन।
मन में आकुलता छाई मम, कर्म ने डाला है बंधन।।4।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशित होता, सुमतिनाथ की शुभ मति से।
केहरि किन्नर नरपति द्वारा, पूज्य हुए प्रभु सुरपति से।।
सुमतिनाथ से सुमति के द्वारा, प्राणी पाते शुभ मति को।
वंदन करके सुमतिनाथ को, पाना हमको सद्गति को।।5।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म पराग चाहता मैं भी, पाद पद्म को पाता हूँ।
पद्म प्रभू आशीष दीजिए, पद में शीश झुकाता हूँ।।
चरणों में बस अर्ज यही है, कृपा नाथ हम पर कीजे।
हे दयानिधे ! हे पद्मप्रभू, हमको शिव पंथ बता दीजे।।6।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री पदमप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन काल में आप सुपारस, तीन लोक के शिखामणी।
ऋषि मुनियों के मध्य में प्रभु जी, आप हैं उत्तम पार्श्वमणी।।
लोकालोक प्रकाश करे वह, पाया तुमने केवलज्ञान।
इसीलिए तो हुये धरा पर, आप जहाँ में सर्व महान्।।7।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चाँदनी की शीतलता, हाथ जोड़ शिरनाती है।
चंद्रमणी तो प्रमुदित होकर, सादर शीश झुकाती है।।
रात कुमुदिनी खिल जाती है, चंद्रबिम्ब के दर्शन से।
विशद ज्ञान का फूल यों खिलता, चंद्र प्रभु के दर्शन से।।8।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुकोमल और सुगंधित, सरवर को शोभित करता।
अपनी आभा के द्वारा जो, जन-जन के मन को हरता।।
शंख पुष्प की शोभा प्रभु जी, पुष्पदंत का तन पाता।
चरण वंदना करता हूँ मैं, विशद भाव से गुण गाता।।9।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल स्वभाव में आ जाता तब, हो जाता है अति शीतल।
कतक योग से नश जाता है, जल में हो जो भी कलमल।।
शीतलनाथ जी शीतलता दो, कर दो मेरे कर्म शमन।
विशद ज्ञान से भर दो हमको, करते हैं शत् बार नमन।।10।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप आपका लखकर मेरे, नयन सृजल हो जाते हैं।
चरण वन्दना करने हेतू, भाव रोक नहिं पाते हैं।।
वासुपूज्य तुम जगतपूज्य हो, आया हूँ तव चरणों में।
विशद मुक्ति न पाई जब तक, बसे रहो मम नयनों में।।11।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्रय दे दो पद पंकज की, मुझको भी श्रेयांस प्रभु ।
श्रेयस्कर मम जीवन कर दो, शीश झुकाता चरण विभु।।
आश्रयदाता हो जग जन के, मंगलमय हैं आप महाँ।
आश्रय चाह रहा है सेवक, नाशो मेरा सर्व जहाँ।।12।।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्म नाशकर, निर्मलता को पाता है।
विमल अमल संयम के द्वारा, निर्मल हृदय बनाता है।।
विमल चरण कमलों से फैले, सारे जग में ज्ञान सुवास।
विमलनाथ शक्ती दो इतनी, 'विशद' ज्ञान में हो मम वास।।13।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अनन्त का छेदन करके, गुण अनन्त तव पाये हैं।
मोह शत्रु पर विजय प्राप्त कर, अनन्तनाथ कहलाये हैं।।
सुर-नर-किन्नर विद्याधर भी, स्तुति करने आते हैं।
ऋषि मुनि यदि गणधर भक्ती कर, सुख अनन्त पा जाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रत सहिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आदिनाथ को आदिकर, जिनानन्त भगवान।
पूज रहे हम भाव से, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनंतनाथपर्यंत चतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः (14 जीव समास)

दोहा- चौदह बतलाए यहाँ, अनुपम जीव समास।
श्री जिन की अर्चा किए, होता ज्ञान प्रकाश।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा- सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

पाँच भेद स्थावर प्राणी, अपर्याप्त जिन गाए हैं।
नहीं रोकते रुकते हैं जो, सूक्ष्म जीव बतलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।1।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मेकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद स्थावर के जो, सूक्ष्म जीव कहलाए हैं।
छह पर्याप्ती पाने वाले, जो पर्याप्त कहाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।2।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मेकेन्द्रिय पर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, जीवों के बतलाए हैं।
रूकने और रोकने वाले, अपर्याप्त कहलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।3।।

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, पर्याप्ती शुभ पाए हैं।
स्थावर पर्याप्त जीव वह, आगम में बतलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।4।।

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय पर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती पूर्ण नहीं जो, दो इन्द्रिय कर पाए हैं।
अपर्याप्त वह जीव जगत के, आगम में बतलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।5।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन रसना दो इन्द्रिय, जीव जगत में पाए हैं।
पर्याप्ती छह पाने वाले, दो इन्द्रिय कहलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।6।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन इन्द्रियाँ पाने वाले, पर्याप्ती न पाए हैं।
अपर्याप्त त्रय इन्द्रिय प्राणी, अतिशय दुःख उपाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।7।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवदया प्रतिपालकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती सहित जीव जो, तीन इन्द्रियाँ पाए हैं।
वह पर्याप्त तीन इन्द्रिय के, धारी प्राणी गाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।8।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवदया प्रतिपालकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती चार इन्द्रिय, पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
अपर्याप्त वह चार इन्द्रिय, जीव असंज्ञी गाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।9।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती सहित जीव जो, चार इन्द्रियाँ पाए हैं।
वह पर्याप्ति चउ इन्द्रिय के, प्राणी जग में गाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।10।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन से हीन बताए हैं।
अपर्याप्त हैं पूर्ण नहीं जो, पर्याप्ति कर पाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।11।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच इन्द्रिय पाने वाले, मन से हीन रहे जो जीव।
होते हैं पर्याप्त जीव जो, करते हैं वह कर्म अतीव।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।12।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव रक्षकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन भी उत्तम पाए हैं।
पर्याप्ती न पूर्ण करें जो, संज्ञ्यपर्याप्त कहाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।13।।

ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवदया धारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन से सहित बताए हैं।
पर्याप्ती छह पाते हैं जो, संज्ञी पर्याप्त कहाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।14।।

ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्रतिपालकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश जीव समास ज्ञापकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः (14 तिथि देवता)

दोहा– गुण अनन्त के कोष हैं, तीर्थंकर भगवान।
व्रत अनन्त का हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

धनुष बाण ले यक्ष प्रतीपद, प्रतिपक्ष प्रभु पद आवे।
धवलोज्ज्वल शुभ कांती वाला, पद्म अर्चना को लावे।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्रतिपदयक्षाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अक्षमालधारी त्रिशूल ले, वैश्वानर सुर सूर्य समान।
गजारुढ़ हो द्वितिया तिथि को, करता आके प्रभु गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैश्वानराय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अश्व यान पर राक्षस चढ़कर, मुसलाखेट खट्वांग समेत।
खिला कमल ले तृतिया तिथि को, भाव सहित पूजा के हेत।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राक्षसाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

मारुत् आभावाला नधृत, जलज भयासी खेट महान्।
व्याघ्रारूढ़ चतुर्थी के दिन, फलादान करता गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नधृताय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

शरद चंद्र की कांती वाला, सर्पासन पर पन्नग देव।
श्रृणि पाश ले हाथ पञ्चमी, के दिन अर्चा करें सदैव।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पन्नगाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

कशांक दान डमरू फरीम कुश, खड्ग अक्षमाला के साथ।
नंदा अधिपति असुर षष्ठी को, पूजे शत्रुपत्र ले हाथ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं असुराय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

वेणु प्रकाश सप्तमी के दिन, अश्वारूढ़ देव सुकुमार।
पाशांकुश फल भोज हाथ ले, वंदन करता बारम्बार।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुकुमाराय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

ले कृपाण फल खेट हाथ में, अर्चा करने पितृ देव।
जगतपति आठें को आवे, प्राणी रक्षा करे सदैव।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पितृदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

शूल कपाल नेत्र त्रयधारी, उदित सूर्य सम करे प्रकाश।
श्री विश्वमाली नवमी को, जिन पूजा करता है खास।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वमालिदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

खेट बाण खड्गोज्ज्वल धारी, मन में अतिशय करुणाधार।
पूर्णाधिप द्वितीय दशमी को, चमर मोर पर हुआ सवार।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चमरदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

धनुष बाण तलवार खेट ले, हो प्रसन्न कर ऊपर हाथ।
एकादशि का ईश वैरोचन, भक्ती सहित झुकावे माथ।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैरोचनाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

हंसारुढ़ महाविद्युत भी, इन्द्र वर्ण सम जोड़े हाथ।
धनुष बाण पूत्री कृपाण ले, द्वादशेश अर्चा को साथ ।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महाविद्युतदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

मारदेव चढ़कर गवेन्द्र पर, चन्द्र खड्ग फल ले निज हाथ।
त्रयोदशाधिप वर्ण नीले में, अर्चा को द्रव्य लावे साथ ।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मारदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

मुदगरांक फल गदा कुठारी, चतुर्दश्यधिपति ले हाथ।
चढ़ गवेन्द्र पर नील वर्ण में, अर्चा करे झुकावे माथ ।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वेश्वराय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

कमनीय वदन बाणामय पाशी, दण्डत्रय को दण्ड ले हाथ।
पिण्डाशन पञ्चादश तिथि को, अर्चा करे झुकाए माथ ।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पिण्डाशनाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

चतुर्थ वलयः (14 मलदोष)

दोहा– मुनी ऐषणा समिति के, धारी हैं गुणवान।
त्यागें चौदह दोष मल, करें आत्म का ध्यान।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा छंद)

भोजन भक्ष्याभक्ष्य है कैसा, शंका करके खावें।
महाव्रतों में मुनिवर अपने, शंकित दोष उपावें।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
शंकित दोष रहित मुनिवर जी, मोक्ष महल को जावें।।1।।

ॐ ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिकने बर्तन चिकने कर से, जो मुनि भोजन पावें।
करते जो आहार मुनी वह, मृच्छित दोष उपावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
मृच्छित दोष रहित मुनिवर जी, मोक्ष महल को जावें।।2।।

ॐ ह्रीं मृच्छितदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित्त वस्तु पर रक्खा भोजन, मुनी जानकर खावें।
वह निक्षिप्त दोष के भागी, मुनिवर आप कहावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
निक्षिप्त दोष से रहित मुनीश्वर, मोक्ष महल को जावें।।3।।

ॐ ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित्त पत्र आदी वस्तु से, भोजन ढ़ाका जावें।
ऐसे भोजन पिहित दोष युत, मुनि जानकर खावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
पिहित दोष से रहित मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।4।।

ॐ ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी वृद्ध बाल सूतक गृह, अग्नी तुरत बुझावें।
गर्भवती नारी से भोजन, दायक दोष कहावे।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोष रहित आहार मुनीश्वर, मोक्ष महल को जावें।।5।।

ॐ ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आंचल से बालक तज नारी, मुनिवर को पड़गाहे।
उसके कर से भोजन लें तो, मुनि दोषी कहलावे।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोष रहित संव्यवहरण मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।6।।

ॐ ह्रीं सम्व्यवहरणदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचिताचित्त मिली वस्तु यदि, जिन मुनिवर जी खावें।
संयम में उन्मिश्र दोष तब, उनके भी लग जावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
रहित दोष उन्मिश्र मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।7।।

ॐ ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रासुक अधजलापका जो, मुनिवर भोजन खावें।
दोष अपरिणत धारी मुनिवर, व्रत में आप लगावे।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोष अपरिणत रहित मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।8।।

ॐ ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितिसहित अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पात्र मेरु खड़िया आदी से, लिपटा भोजन पावें।
लिप्त भोज मिट्टी आदी युत, जो आहार करावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
लिप्त दोष से रहित मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।9।।

ॐ ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रदत्त वस्तू को मुनिवर, कर से बहुत गिरावें।
बार–बार हाथों को धोकर, मुनिवर भोजन खावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोषरहित परित्यजन मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।10।।

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल उष्ण मिलाकर वस्तू, स्वाद बनाकर खावें।
सत् संयम में अपने मुनिवर, भारी दोष लगावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोष रहित संयोजन मुनिवर, शिव पदवी को पावें।।11।।

ॐ ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन, इसके अन्दर पावें।
इससे अधिक ग्रास मुनि खावें, तो वह दोष लगावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
रहित दोष अप्रमाण मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।12।।

ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुचि से मीठा भोजन खाके, दाता के गुण गावें।
भोजन में आसक्त मुनीश्वर, दोष अनेको पावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
दोष रहित अंगार मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।13।।

ॐ ह्रीं अंगारदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुचि से रहित प्राप्त भोजन कर, दाता पर गुर्रावें।
निन्दा करते हुए मुनीश्वर, भोजन करते जावें।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
धूम दोष से रहित मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें।।14।।

ॐ ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह उद्गम दोषोत्पादन, के सोलह बतलाए।
समिति एषणा के दश भाई, चार अन्य कहलाए।।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, अपने दोष नशावें।
छियालिस दोष रहित मुनिवर जी, शिव पदवी को पावें।।15।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुत अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः (14 देवकृत अतिशय)

दोहा- चौदह अतिशय देवकृत, पाते हैं जिनराज।
अतः पूजते पद युगल, मिलकर सकल समाज।।

पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा- सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

रही भाषा अर्द्धमागध, सभी को सुखकार है।
वाणी है ॐकारमय शुभ, धर्म की आधार है।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।1।।

ॐ ह्रीं मागधी भाषातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के सब प्राणियों में, भाव मैत्री के जगें।
धर्म के दीपक जहाँ में, आप ही शुभ जग-मगें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वजीव मैत्रीभावातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतु के फूल फल शुभ, स्वयं ही खिलते वहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, आगमन होवे जहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलपुष्प प्रकाशातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि दर्पण वत् चमकती, पद पड़ें प्रभु के जहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, गमन होता है वहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।4।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलसम महीमनोज्ञातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि कंटक रहित हो शुभ, जहाँ प्रभु करते गमन।
भव्यप्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।5।।

ॐ ह्रीं वायुनाशोधिता मही मयातिशयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन सुरभित शुभ सुगन्धित, बहे अति मन मोहनी।
भव्य जीवों की सुभाषित, रहे अति शुभ सोहनी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।6।।

ॐ ह्रीं विहरर्णे मंद-अनिलो वहति महातिशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में आनन्द कारण, है प्रभू का आगमन।
भव्य प्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।7।।

ॐ ह्रीं विहरर्णे सवजीवामानंदो भवतीति महातिशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार होता, जीव सुखमय हों सभी।
धर्म की शुभ भावना से, दुःखमय न हों कभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।8।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकारमयातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करते, देव मिलकर के सभी।
झूमकर के नृत्य करते, भाव से सुर नर तभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।9।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधांबुवृष्टि मयातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद तल कमल की, देवगण रचना करें।
हों जगत जन सुखी सारे, और की बाधा हरें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।10।।

ॐ ह्रीं पादन्यासे देवाः पद्मानि कल्पते अतिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल फूल खिलते सब ऋतु के, श्वेत धान्यों से भरें।
डालियाँ झुक जाएँ फल से, मन को प्रमुदित जो करें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।11।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिशोभिता महीजायते अतिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन शुभ हो जाए निर्मल, जहाँ प्रभु का हो गमन।
सब दिशाओं को स्वयं ही, देव कर देते चमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।12।।

ॐ ह्रीं जिनोपरिमगगनं निर्मलं भवतीति महातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, प्रभु का जब हो गमन।
परस्पर आह्वान करते, सुर करें चरणों नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।13।।

ॐ ह्रीं दिवि देवा परस्पर माव्हाननं कुर्वति महातिशयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, देव भक्ती भाव से।
कर रहे अर्चा प्रभु की, मिल सभी सुर चाव से।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभू के, शीश विशद झुका रहे।।14।।

ॐ ह्रीं समीपे अष्टमंगलद्रव्य महातिशयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौदह अतिशय प्राप्त कर, उभयलक्ष्मी पाय।
समवशरण में राजते, तीर्थंकर जिनराय।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश अतिशय उभयलक्ष्मी प्राप्त अनन्त व्रताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम वलयः (14 मार्गणा)

दोहा- श्रेष्ठ मार्गणा जानिए, आगम के अनुसार।
भटक रहा है जीव यह, जिनमें बारम्बार।।

षष्ठम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा- सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द चौपाई)

गती मार्गणा पाके जीव, दुःख उठाते विशद अतीव।
गति का जिनवर किये विनाश, पाए केवल ज्ञान प्रकाश।।1।।

ॐ ह्रीं गति मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पायें पाँच इन्द्रियाँ लोग, जिनसे हो दुख का संयोग।
जिनवर करके उनका नाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय मार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी काय मार्गणा युक्त, भव से न हो पाते मुक्त।
काय मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं काय मार्गणा प्ररूपकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों द्वारा आश्रव पाय, प्राणी सारा जगत भ्रमाय।
योग मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं योग मार्गणा देशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद वेद के गाए तीन, भोगों में रहते तल्लीन।
वेद मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।5।।

ॐ ह्रीं वेद मार्गणा मृग्यकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को नित कषे कषाय, आश्रव बन्ध करे दुख पाय।
सब कषाय का करें विनाश, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।6।।

ॐ ह्रीं कषाय मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मार्गणा में अज्ञान, धारी प्राणी रहे प्रधान।
करके निज आतम का ध्यान, पा लेते हैं केवल ज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञान मार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम और असंयम ज्ञान, रही मार्गणा की पहिचान।
यथाख्यात चारित्र प्रधान, पाकर पाते केवलज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं संयममार्गणा पालकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन रही मार्गणा खास, जिससे हो सामान्याभास।
प्राप्त होय जब पुण्य अतीव, केवल दर्शन पावे जीव।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा वक्तृभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेश्या के छह भेद बताए, अशुभ कर्म के कारण गाए।
लेश्या का कर पूर्ण विनाश, प्राप्त किए प्रभु मुक्ती वास।।10।।

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जीव पाते श्रद्धान, यही भव्य की है पहिचान।
भव्याभव्य मार्गणा नाश, पाते प्राणी शिवपुर वास।।11।।

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या शासन मिश्र प्रधान, उपशम क्षायिक वेदक जान।
सभी मार्गणा किए विनाश, क्षायिक दर्शन पाए खास।।12।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संज्ञी असंज्ञी जानो आप, पाते दोनों बहु संताप।
संज्ञी मार्गणा किए विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा प्रतिबोधकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार मार्गणा के दो भेद, पहुँचाते हैं भारी खेद।
प्रभु ने उनका किया विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।14।।

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम् वलयः (14 विधिसिद्ध)

दोहा– गुण अनन्त के कोष हैं, तीर्थंकर भगवान।
व्रत अनन्त का हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

सप्तम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल : नन्दीश्वर)

जो तप से हुए हैं सिद्ध, उनको हम ध्यायें।
चरणों में देकर ढोक, मन से गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं तपः सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए नय से सिद्ध, उनको सिर नाएँ।
चरणों में देकर ढोक, मन से गुण गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं नयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम से हुए हैं सिद्ध, सिद्धी हम पाएँ।
चरणों में देकर ढोक, मन से गुण गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं संयमसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित धारी हैं सिद्ध, निज गुण महकाएँ।
चरणों में देकर ढोक, मन से गुण गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चरित्रसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर श्रुताभ्यास जो सिद्ध, हुए हैं अविकारी।
हम पूजा करते आज, उनकी शुभकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रुताभ्याससिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हुए भाव से सिद्ध, जग मंगलकारी।
हम पूजा करते आज, उनकी शुभकारी।।6।।

ॐ ह्रीं निश्चयात्मक भाव सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान सुगुण सम्पन्न, सिद्ध हुए नामी।
हम पूजा करते आज, उनकी शिवगामी।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु श्रद्धा गुण सम्पन्न, हुए हैं शिवनामी।
हम पूजा करते आज, उनकी शिवगामी।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शन गुण संयुक्त, सिद्ध हुए भाई।
फैली है तीनों लोक, उनकी प्रभुताई।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीर्यानन्त सम्पन्न, हुए हैं सुखदायी।
फैली है तीनों लोक, उनकी प्रभुताई।।10।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सूक्ष्म सुगुण संयुक्त, सिद्ध जग में गाए।
अर्चा करने को आज, चरणों हम आए।।11।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहन सुगुण समेत, सिद्ध जिन कहलाए।
अर्चा करने को आज, चरणों हम आए।।12।।

ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसमेत सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अगुरुलघु गुणवान, मेरे मन भाए।
अर्चा करने को आज, चरणों हम आए।।13।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणगरिष्ठ सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अव्याबाध समृद्ध, सिद्ध शिव पद पाए।
अर्चा करने को आज, चरणों हम आए।।14।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसमृद्ध सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह प्रकार जिन सिद्ध, शिव रमणी पाए।
अर्चा करने को आज, चरणों हम आए।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणसहित सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम् वलयः (14 कुलकर)

दोहा- चौदह कुलकर जानिए, करें सुकुल आरम्भ।
अर्घ्यों का करते यहाँ, आज यहाँ प्रारम्भ।।

अष्टम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

मनु प्रति श्रुति पहले गाये, रवि चन्द्र का ज्ञान कराए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।1।।
ॐ ह्रीं श्री प्रतिश्रुति मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सन्मति मनू कहाए, तम का जो ज्ञान कराए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।2।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मति मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु क्षेमंकर कहलाए, पशु पालन जो करवाए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।3।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु क्षेमंधर मनहारी, रक्षा शिक्षा दी भारी।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।4।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंधर मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु शीमंकर थे भाई, सीमा की विधि बताई।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।5।।
ॐ ह्रीं श्री शीमंकर मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु सीमंधर भी जानो, स्वामित्व बताया मानो।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।6।।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विमल वाहन कहलाए, वाहन प्रयोग बतलाए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।7।।
ॐ ह्रीं श्री विमलवाहन मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु चक्षुष्मान कहाए, सन्तान का ज्ञान कराए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चक्षुष्मान मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मनु यशस्वी ध्यायें, बच्चों के नाम सिखाएँ।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।9।।
ॐ ह्रीं श्री यशस्वी मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु अभीचन्द्र मन भाए, बच्चों को बोली सिखाए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।10।।
ॐ ह्रीं श्री अभिचंद्र मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्राभ मनु जग नामी, हुए शीत निवारी स्वामी।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।11।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्राभ मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु मरूदेव हितकारी, मेघादि के हुए निवारी।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।12।।
ॐ ह्रीं श्री मरुदेव मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु रहे प्रसेनजित् भाई, जरायु की विधि सिखाई।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।13।।
ॐ ह्रीं श्री प्रसेनजित् मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु नाभिराय शुभकारी, दी नाल की शिक्षा सारी।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।14।।
ॐ ह्रीं श्री नाभिराज मनवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनु चौदह ये कहलाए, कुल का जो ज्ञान कराए।
जो पुण्य पुरुष कहलाए, अनुक्रम से शिव पद पाए।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्दश कुलकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम् वलयः (14 गुणस्थान)

दोहा- क्रमशः गुणस्थान का, करते जीव विकाश।
विशद ज्ञान करके प्रकट, करते शिवपुर वास।।

नवम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा- सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(कुसुमलता छंद)

गुणस्थान प्रथम कहलाया, जिसमें हो मिथ्या श्रद्धान।
कहलाया मिथ्यात्व अतः जो, ऐसा कहते जिन भगवान।।
गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान रहा सासादन, सम्यक् श्रद्धा करे विनाश।
हो कषाय का उदय जीव के, पहुँचे जो मिथ्या के पास।।

गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सासादन गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान मिश्र कहलाए, मिले-जुले होते परिणाम।
उदयमिश्र प्रकृति के होते, हो श्रद्धा का काम तमाम।।
गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मिश्र गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत से रहित जीव हो कोई, रखता है सम्यक् श्रद्धान।
सम्यक् श्रद्धा के धारी का, चौथा होवे गुणस्थान।।
गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा सहित देशव्रत, धारण करते हैं जो जीव।
देशव्रती कहलाने वाले, पाते हैं जो पुण्य अतीव।।
गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं देशविरत गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा सहित महाव्रत, धारण करने वाले लोग।
गुणस्थान प्राप्त कर छठवाँ, जो प्रमाद का पाते योग।।
गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रमाद से रहित कहाए, अप्रमत्त वह गुण स्थान।
शुद्धोपयोग प्राप्त करके वह, निज आतम का करते ध्यान।।

गुणस्थानातीत बनें हम, ऐसे भाव बनाते हैं।
सिद्ध प्रभू यह पदवी पाए, उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अप्रमत्तगुणस्थानवर्ति योगीन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्थान आठवे में शुभ, होते हैं अपूर्व परिणाम।
श्रेणी का प्रारम्भ यहाँ कर, हो जाते मुनिवर निष्काम।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।8।।

ॐ ह्रीं अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एककालवर्ती जीवों के जहाँ, होंय परिणाम समान।
उन जीवों के जानो भाई, शुभ अनिवृत्ती गुणस्थान।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।9।।

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ति योगिराजेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म लोभ रह जाए जहाँ पर, सर्व कषायों की हो हान।
सूक्ष्म साम्पराय जैनागम में, कहलाता वह गुणस्थान।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।10।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मलोभ गुणस्थानवर्ति मुनीन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषायों के उपशम से, ग्यारहवाँ हो गुणस्थान।
गिरे मुहूर्त में जीव वहाँ से, आगम का यह रहा विधान।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।11।।

ॐ ह्रीं उपशांतकषाय गुणस्थानवर्ति योगिनरेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषाएँ क्षीण किए फिर, कर्म घातिया का हो नाश।
गुणस्थान कहा बारहवाँ, चार कर्म वह करे विनाश।।

ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।12।।

ॐ ह्रीं क्षीणमोह गुणस्थानवर्ति मुनिसंघेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान प्राप्त करके भी, भोगों का पाते संयोग।
गुणस्थान सयोग केवली, का प्राणी करते हैं भोग।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।13।।

ॐ ह्रीं सयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी रहे अयोगी, चौदहवाँ हो गुण स्थान।
ऐसे अर्हत् पद के धारी, जिनका करें निरन्तर ध्यान।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।14।।

ॐ ह्रीं अयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान प्राप्त कर चौदह, बन जाते हैं सिद्ध महान।
गुण स्थानातीत कहे जो, उनका करते हम गुणगान।।
ऐसे निश्चल योगी को हम, नित्य निरन्तर करें प्रणाम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हम भी प्राप्त करें शिवधाम।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश गुणस्थानवर्ति योगिराजेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम् वलयः (14 नदियाँ)

दोहा– चौदह नदियाँ जानिए, जम्बूद्वीप में खास।
जैनागम में यह किए, श्री जिनदेव प्रकाश।।

दशम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।

ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल : नन्दीश्वर)

गंगा नदि के बीच में भाई, हैं जिनबिम्ब श्रेष्ठ सुखदायी।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता गंगा महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिन्धु की महिमा है न्यारी, हैं जिनबिम्ब जहाँ शुभकारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता सिन्धु महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमवन से रोहित बह जाए, जिसके मध्य बिम्ब शुभ गाए।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता रोहित महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोहितास्या है नदी निराली, वीतराग जिनबिम्बों वाली।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता रोहितास्या महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरित नदी बहकर के आए, जिसके मध्य बिम्ब जिन गाए।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता हरित महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिकान्ता सरिता शुभ जानो, जिसके मध्य बिम्ब जिन मानो।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता हरिकान्ता महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदी रही मनहारी, जो है भारी विस्मयकारी।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।7।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता सीता महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा सरिता शुभ गाई, फैली जिसकी जग प्रभुताई।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।8।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता सीतोदा महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारी नदी रही शुभकारी, जिनबिम्बों युत मंगलकारी।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।9।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता नारी महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकान्ता है महिमाशाली, वीतराग जिन बिम्बों वाली।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।10।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता नरकान्ता महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णकूला सरिता है न्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।11।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता स्वर्णकूला महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप्यकूला के गुण को गाए, महिमा कहके भी थक जाए।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।12।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता रूप्यकूला महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्ता नदी तीर्थ कहलाए, जिनबिम्बों की महिमा पाए।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।13।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता रक्ता महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तोदा में जल जो आए, गंधोदक सम जो कहलाए।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।14।।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्विता रक्तोदा महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप की हैं सरिताएँ, महिमाशाली जो कहलाएँ।
श्री जिनबिम्ब श्रेष्ठ शुभ गाए, जिनकी महिमा कही न जाए।।
ॐ ह्रीं चतुर्दश जिनबिम्बसमन्विता महानदी सत्तीथार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशम् वलयः (14 लोकसंबंधी मंत्र)

दोहा– चौदह राजू लोक यह, होता पुरुषाकार।
लोकभावना में रहा, जिसका शुभ विस्तार।।

एकादश वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

सप्तम नरक के नीचे भाई, है राजू प्रमाण स्थान।
जो निगोद स्थान कहाए, ज्ञान कराएँ जिन भगवान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं निगोदस्थान प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम नरक महातम पृथ्वी, रहा माधवी जिसका नाम।
रहे प्रकाशक केवलज्ञानी, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं सप्तम नरकस्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठवाँ नरक महातम पृथ्वी, मघवी इक राजू स्थान।
केवलज्ञानी यह बतलाए, जिनका हम करते गुणगान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं षष्ठ नरक प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम नरक अरिष्टा गाया, पृथ्वी धूम कहे भगवान।
ऊपर से नीचे तक पृथ्वी, रही एक राजू स्थान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं पंचम नरक प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक अञ्जना चौथी पृथ्वी, पंक बताया जिसका नाम।
ज्ञान कराने वाले श्री जिन, के पद बारम्बार प्रणाम।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्थ नरक प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय पृथ्वी रही बालुका, मेघा रहा नरक का नाम।
तीर्थंकर ने ज्ञान कराया, उनके चरणों विशद प्रणाम।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं तृतीय नरक प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक द्वय खर पंक भाग में, भावन व्यन्तर के स्थान।
राजू एक प्रमाण बताए, केवलज्ञानी श्री भगवान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं नरकद्वययुत भावनालय स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी तल से सात सौ नव्वे, योजन से नौ सौ तक जान।
ज्योतिष लोक प्रकाशित करने, वाले कहे श्री भगवान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कलोक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म लोक पद के स्वरूप का, श्री जिनवर जी किए प्रकाश।
वन्दन करने से जिनवर के, भक्तों की हो पूरी आश।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मलोक पदस्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग स्वरूप का वर्णन करने, वाले हुए हैं जिन भगवान।
जिनकी अर्चा करने से हो, भवि जीवों का भी कल्याण।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं स्वर्ग स्वरूप कथकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उसके ऊपर स्वर्ग लोक का, तीर्थंकर जिन किए प्रकाश।
जिनकी चरण वन्दना करने, से भव्यों का होय विकास।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं तदुपरि स्वर्गलोक प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों के छह युगलों का शुभ, श्री जिनवर जी किए बखान।
ऐसे केवलज्ञानी जिनका, करते हैं हम भी गुणगान।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं षड्युग्म स्वर्ग स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रैवेयक को आदी करके, किए कथन मुक्ती पर्यन्त।
केवलज्ञान के द्वारा वर्णन, करने वाले हैं अर्हन्त।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं ग्रैवेयकादि मुक्तिपर्यंत स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर जिन सिद्धों का, वात वलय में है अवगाह।
भव सिन्धू से पार उतरने, शिवपुर की अब पकड़ी राह।।
लोक भावना भाने वाले, हो जाते हैं भव से पार।
श्री जिनेन्द्र के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं सिद्धावगाहकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीनों लोकों का किया, जिनवर ने व्याख्यान।
उनके चरणों का 'विशद', करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश लोकसंबंधी अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशम् वलयः (14 स्वर)

दोहा– शब्द ब्रह्म स्वरूप हैं, चौदह स्वर मनहार।
श्रुतमय भाषा में करें, जीवों का उपकार।।

द्वादशम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द : मोतियादाम)

है वर्ण अकार प्रधान अहा, जो भाषा का आधार कहा।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकार वर्ण शुभकर भाई, द्विमात्रिक जो है सुखदायी।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।2 ।।

ॐ ह्रीं आकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वर्ण इकार विकार हरे, व्यंजन में मिलके पूर्ण करे।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।3 ।।

ॐ ह्रीं लघु इकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईकार वर्ण की प्रभुताई, जग के ग्रन्थन में शुभ गाई।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।4 ।।

ॐ ह्रीं गुरु ईकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वर्ण उकार महान करे, जो बीजाक्षर में काम करे।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।5 ।।

ॐ ह्रीं लघु उकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊकार वर्ण उत्तम गाया, जो ध्यान का हेतू बतलाया।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।6 ।।

ॐ ह्रीं गुरु ऊकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वर्ण ऋकार ऋशीष भजें, सद्ज्ञान विज्ञान से पूर्ण सजें।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।7 ।।

ॐ ह्रीं लघु ऋकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॠकार वर्ण ऋषभादि कहे, जिनवाणी के आधार रहे।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।8 ।।

ॐ ह्रीं दीर्घ ॠकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वर्ण लृकार लिखा पढ़ते, पढ़ते-पढ़ते आगे बढ़ते।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।9 ।।

ॐ ह्रीं लघु लृकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॡ कार वर्ण का ज्ञान करें, अन्तर का सब अज्ञान हरें।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।10 ।।

ॐ ह्रीं दीर्घ ॡकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वर्ण एकार यहाँ गाया, जो सन्धी अक्षर कहलाया।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।11 ।।

ॐ ह्रीं एकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐकार यही ऐलान करे, शुभ ध्यान किए सब क्लेश हरे।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।12 ।।

ॐ ह्रीं ऐकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओकार कहा स्वर श्रेष्ठ महाँ, तज आलम्बन अब पाएँ कहाँ।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।13 ।।

ॐ ह्रीं ओकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औकार का ध्यान लगाना है, निज का गुण निज में पाना है।
न क्षरण होय अक्षर जानो, जो काल अनादि रहा मानो ।।14 ।।

ॐ ह्रीं औकार स्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- स्वर व्यञ्जन के साथ में, होय वचन व्यवहार।
ॐकार मय देशना, है जिसका आधार ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरवादिने वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशम् वलयः (14 चक्रवर्ती रत्न)

दोहा- चौदह पाते रत्न शुभ, चक्रवर्ति मनहार।
जग के जीवों का सदा, जिनसे हो उपकार ।।

त्रयोदशम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त ।।

ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल : नन्दीश्वर)

चक्र अजीव रत्न कहलाए, शत्रू का संहार कराए।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, चक्ररत्न को पाने वाले।।1।।

ॐ ह्रीं चक्र रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटक की जो रक्षा करवाए, जल वृष्टी से मुक्ति दिलाए।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, छत्ररत्न को पाने वाले।।2।।

ॐ ह्रीं छत्र रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रू से जो विजय दिलाए, खड्गरत्न अनुपम कहलाए।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, आयुध रत्न को पाने वाले।।3।।

ॐ ह्रीं खड्ग रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुफा द्वार जो खोले भाई, कंटक आदी करे सफाई।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, दण्ड रत्न को पाने वाले।।4।।

ॐ ह्रीं दण्ड रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्धकार जो दूर भगाए, वृषभाचल पर नाम लिखाए।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, रत्न कांकणी पाने वाले।।5।।

ॐ ह्रीं काकिणी रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विजयार्द्ध गुफा में भारी, करे उजाला अतिशयकारी।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, मणीरत्न को पाने वाले।।6।।

ॐ ह्रीं मणी रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन जलाशय में जो भाई, बनता है शुभ आश्रयदायी।
पुण्यवान शुभ रहे निराले, चर्म रत्न को पाने वाले।।7।।

ॐ ह्रीं चर्म रत्न सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेनापती रत्न शुभकारी, युद्ध की शिक्षा देता भारी।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।8।।

ॐ ह्रीं सेनापति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हिसाब रखता है सारा, गृहपति रत्न कहा वह प्यारा।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।9।।

ॐ ह्रीं गृहपति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज से होती श्रेष्ठ सवारी, काम युद्ध के आता भारी।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।10।।

ॐ ह्रीं गजरत्न रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्व युद्ध के काम में आए, तीव्र गती वाला कहलाए।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।11।।

ॐ ह्रीं अश्व रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दैव उपद्रव शान्ती कारी, पुरोहित रत्न है श्रेष्ठ पुजारी।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।12।।

ॐ ह्रीं पुरोहित रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मकान सेतू बनवाए, रत्न स्थपति वह कहलाए।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।13।।

ॐ ह्रीं स्थपति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ रत्न होता है नारी, गृह की जो होती अधिकारी।
यह सजीव रत्न कहलाए, पुण्यवान प्राणी यह पाए।।14।।

ॐ ह्रीं युवती (नारी) रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चक्री पाए रत्न शुभ, चौदह मंगलकार।
जिसके द्वारा प्रजाजन, का होता उद्धार।।

ॐ ह्रीं चतुदर्श चक्रवर्तीरत्न संबंधी अनन्तव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्दशम् वलयः (चौदह पूर्व वर्णन)

दोहा– चौदह पूरव की यहाँ, अर्चा करें महान।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, करते हैं गुणगान।।

चतुर्दशम् वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

गुण अनन्त के धारी जग में, होते सिद्ध अनन्तानन्त।
व्रत अनन्त के फल से करते, अपने जो कर्मों का अन्त।।
ज्ञान अनन्त प्राप्त हो हमको, करते भाव सहित अर्चन।
अतः प्रभु का हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा– सुरभित लाए पुष्प यह, करते प्रभु गुणगान।
नाथ दया कर भक्त का, करो शीघ्र कल्याण।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(रोला छन्द)

प्रथम भेद उत्पाद पूर्व में, पुद्गल द्रव्य का ।
जीवों के उत्पाद कथन, स्वरूपादिक का ।।
हैं करोड़ पद वस्तु दश, सौ प्राभृत गाए ।
जिनवाणी को भक्ति भाव से, शीश झुकाए ।।1।।

ॐ ह्रीं एक कोटि पद भूषित प्रथम उत्पाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अग्रायणी पूर्व में, स्वसमय कथन है।
क्रियावाद की किरिया का, सुन्दर दर्शन है।।
चौदह वस्तु दो सौ अस्सी, प्राभृत गाए।
लाख छियानवे पद भक्ति मय, शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं षड्वति लक्ष पद भूषित द्वितीय अग्रायणीय पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वीर्यानुवाद में छद्मस्थों का, किया कथन है ।
आत्मवीर्य पर वीर्य शक्ति, का भी वर्णन है ।।
आठ वस्तुगत वस्तु शत्, वसु प्राभृत गाए ।
सत्तर लाख सुपद में, अपना शीश झुकाए ।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तति लक्ष पद भूषित तृतीय वीर्यानुवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति प्रवाद में, नय के भेद बताए ।
अस्ति नास्ति और अस्तिकाय, के भेद गिनाए ।।
अष्टादश वस्तु त्रय शत्, अस्सी प्राभृत गाए ।
साठ लाख पद को भक्ति, मय शीश झुकाए ।।4।।

ॐ ह्रीं षष्टि लक्ष पद भूषित चतुर्थ अस्ति–नास्ति प्रवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ज्ञानप्रवाद में आठों ज्ञानों, का वर्णन है ।
इन्द्रिय आदि के भेदों का, दिग्दर्शन है ।।
वस्तु बारह भेद युक्त शत्, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भावसौं, शीश झुकाए ।।5।।

ॐ ह्रीं नव नवति लक्ष नव नवति सहस्त्र नव शत् नव नवतिपद भूषित पंचम ज्ञान प्रवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम सत्य प्रवाद में, सत्यासत्य कथन है ।
भाव वचन गुप्ति अरु सत्य का, दिग्दर्शन है ।।
द्वादश वस्तु भेद का चालिस, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव सौं, शीश झुकाए ।।6।।

ॐ ह्रीं एक कोटि पद भूषित षष्टम सत्य प्रवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवाद में आत्म द्रव्य का, कथन मनोहर ।
षट् कायिक जीवों का वर्णन, किया है सुन्दर ।।
वस्तु सोलह विंशति त्रय शत्, प्राभृत गाए ।
पद छब्बिस कोटि में, हम सब शीश झुकाए ।।7।।

ॐ ह्रीं षड्विंशति कोटि पद भूषित सप्तम आत्म प्रवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्म प्रवाद में कर्म बन्ध शत्, उदय बताये ।
स्थिति उदीरणा शक्ति नाश की, कथनी गाए ।।
बीस वस्तु गत जान चार सौ, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव से, शीश झुकाए ।।8।।

ॐ ह्रीं एक कोटि अशीति लक्ष पद भूषित अष्टम कर्म प्रवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमा प्रत्याख्यान पाप का, है परिहारी ।
नियम प्रतिक्रम तप आराधन, व्रत का धारी ।।
तीन वस्तु गत जान चार सौ, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव से, शीश झुकाए ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्ष पद भूषित नवम प्रत्याख्यान पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानुवाद में मंत्र तंत्र, विद्या की सिद्धि ।
समुद्घात रज्जू राशि की, क्षेत्र प्रसिद्धि ।
वस्तु पन्द्रह जान तीन सौं, प्राभृत गाए ।
एक लाख दश पद में, अपना शीश झुकाए ।।10।।

ॐ ह्रीं एक कोटि दश लक्ष पद भूषित दशम विद्यानुवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणवाद में सूर्य चन्द्र, नक्षत्र की चर्चा ।
पुण्य पुरुष का कथन और, कल्याणक की अर्चा ।।
वस्तुगत हैं दश दो सौ, जिन प्राभृत गाए ।
पद छब्बीस करोड़ भाव, सौं शीश झुकाए ।।11।।

ॐ ह्रीं षड्विंशति कोटि पद भूषित एक दशम कल्याणवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणवाद में स्वास्थ्य और इस, तन का वर्णन ।
अष्टांग आयुर्वेद और, प्राणायाम के लक्षण ।।

वस्तुगत हैं दश दो सौ, जिन प्राभृत गाए ।
तेरह कोटि सुपद में, भाव सौं शीश झुकाए ।।12।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश कोटि पद भूषित द्वादशम प्राणवाद पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया विशाल में काव्य शिल्प, लेखन औ विद्या ।
कला बहत्तर नर नारी में, चौंसठ विद्या ।।
वस्तुगत हैं दश सौ दश, जिन प्राभृत गाए ।
नौ करोड़ पद में भावों से, शीश झुकाए ।।13।।

ॐ ह्रीं नव कोटि पद भूषित त्रयोदशम क्रिया–विशाल पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक बिन्दु शुभ सार में, वसु व्यवहार का वर्णन ।
श्रुत सम्पत्ती परिकर्म, गणित राशि का लक्षण ।।
वस्तूगत दश हैं दो सौ, जिन प्राभृत गाए ।
ढाई कोटि पद में, भावों से शीश झुकाए ।।14।।

ॐ ह्रीं द्वादश कोटि पंचाशत् लक्ष पद भूषित चर्तुदशम् लोक बिंदुसार पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा छन्द)

अड़सठ शत् इक वस्तुगत, प्राभृत तीन हजार ।
छह सौ अड़सठ जोड़ कर, करिए तत्त्व विचार ।।
लाख पचास सु पाँच पद, अरु पंचानवे कोड़ ।
चौदह पूर्व को अर्घ्य दूँ, भक्ति भाव कर जोड़ ।।

ॐ ह्रीं सर्व एक शत् अष्टषष्ठि वस्तुगत त्रि सहस्र षट्शत् अष्टषष्ठि प्राभृत मय पंच नवति कोटि पंचाशत् लक्ष पंच पद भूषित चतुर्दश पूर्व अनन्त व्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

गुण अनन्त को पाने हेतू, व्रतानन्त करते शुभकार।
संयम पालन करने वाले, होते जग में मंगलकार।।

कर्म निर्जरा करते प्राणी, सम्यक् तप जो करें महान।
अल्प समय में भव्य जीव वह, सुपद प्राप्त करते निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं अनन्त व्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : (1) ॐ ह्रीं अनन्तव्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अनन्तानन्त सिज्झ धम्मे भगवतो महाविज्झ अनन्तानन्त केवलीय केवलणाणे अनन्तदंसण अणु पुजवासणे अनन्ते अनन्तानन्त केवलि स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक में पूज्य जिन, ऊर्ध्व मध्य पाताल।
व्रत अनन्त की हम यहाँ, गाते हैं जयमला।।

(चौबोला छंद)

जम्बूद्वीप के आर्य खण्ड में, कौशल देश रहा मनहार।
नगर अयोध्या पद्म खण्ड में, ग्राम रहा अतिशय शुभकार।।
ब्राह्मण सोम शर्मा की पत्नि, सोमा था जिसका शुभ नाम।
स्वयं पुत्रियों सहित गाँव में, करता रहता था कई काम।।
भिक्षा लेकर जीने वाला, रहा दरिद्री ज्ञान विहीन।
जीवन के दिन बिता रहा था, बेबश होकर के जो न दीन।।
एक बार वह घर से निकला, श्रेष्ठ सकुन देखा शुभकार।
लोग अनेकों बढ़ते जाते, आगे-आगे बारम्बार।।
जिन अनन्त के समवशरण में, वन्दन करने जाते लोग।
ब्राह्मण ने भी जिन अर्चा का, पाया पावनतम संयोग।।
दिव्य देशना सुनकर प्रभु की, पाया उसने सद् श्रद्धान।
आठ मूलगुण धारण करके, देशव्रती बन गया प्रधान।।
प्रश्न किया उसने जिनवर से, हो दरिद्रता कैसे दूर।
भावुक हुआ प्रभु के चरणों, बेचारा ब्राह्मण भरपूर।।

दिव्य देशना हुई प्रभु की, सुनकर के यह अतिशयकार।
तुम अनन्त व्रत का पालन कर, पूजा करना मंगलकार।।
चौदह वर्षों तक व्रत करके, उद्यापन करना पश्चात।
उद्यापन न हो पाए यदि, तो व्रत दुगने करना भ्रात।।
श्री जिनदेव अनन्त केवली का, करना शुभ मन से जाप।
इस विधि पूजा से कट जाते, जन्म-जन्म के सारे पाप।।
जिन मुख से व्रत की विधि सुनकर, व्रत का पालन किया प्रधान।
अल्प काल में उस ब्राह्मण ने, पाया भारी धन सम्मान।।
ब्राह्मण की यश वृद्धी वैभव, देख नगर के ज्ञानी लोग।
व्रत का पालन किए भाव से, वह भी पाए यश का भोग।।
गुरू मानने लगे लोग कई, ब्राह्मण को सुन व्रत उपदेश।
जैन धर्म के धारी प्राणी, बने वहाँ पर कई विशेष।।
फिर सन्यासमरण कर ब्राह्मण, स्वर्ग लोक में किया प्रयाण।
पत्नी देवी हुई स्वर्ग में, पाया वैभव वहाँ महान।।
स्वर्ग लोक से चयकर ब्राह्मण, अनन्त वीर्य नृप हुआ प्रधान।
पटरानी तव हुई ब्राह्मणी, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
अनन्तवीर्य नृप दीक्षा लेकर, सिद्ध श्री पाए अभिराम।
अच्युत स्वर्ग गई पटरानी, पाया व्रत का शुभ परिणाम।।
यह अनन्त व्रत का पालन कर, स्वयं जगाते अपना भाग्य।
'विशद' भावना हम यह भाते, जागे मेरा भी सौभाग्य।।

दोहा– जिन अनन्त के चरण में, लगी है मेरी आस।
हम अनन्त गुण पाएँगे, पूरा है विश्वास।।

ॐ ह्रीं अनन्तव्रताराध्य श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– यह अनन्त व्रत पालकर, करना निज उद्धार।
सुख-शांती सौभाग्य पा, पाना है शिवद्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2538 विक्रम सम्वत् 2069 मासोत्तममासे शुभ मासे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे शुभ तिथि पञ्चमी मंगलवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्या श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः विशदसागराचार्येण द्वारा श्री अनन्त व्रत विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

श्री अनन्तनाथ भगवान की आरती

श्री अनन्तनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारे थारी, मूरत निहारें।। टेक
प्रभु करो विशद उद्धार, आज थारी आरती उतारें....
श्यामा माता के सुत प्यारे, हरीषेण के राजदुलारे।
जन्मे अयोध्या धाम, आज थारी आरती उतारें... ।।1।।
पचास लाख पूरब की जानो, श्री जिनेन्द्र की आयु मानो।
सेही चिह्न पहिचान, आज थारी आरती उतारें... ।।2।।
पचास धनुष ऊँचे कहलाए, स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए।
'विशद' ज्ञान के ताज, आज थारी आरती उतारें... ।।3।।
कार्तिक वदी एकम को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
ज्येष्ठ वदी द्वादशी जन्म, आज थारी आरती उतारें... ।।4।।
जेठ वदी द्वादशी तप पाए, चैत अमावस ज्ञान जगाए।
चैत अमावस मोक्ष, आज थारी आरती उतारें... ।।5।।
व्रतानन्त शुभ जो भी पावें, अपनी वे सौभाग्य जगावें।
पावें शिवपुर राज, आज थारी आरती उतारें... ।।6।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।